नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

टाइगर स्टेट; और व्यापक बनाने की जरूरत

बुधवार को विश्व बाघ दिवस मनाया गया. मध्य प्रदेश के लिए इस दिन का विशेष महत्व है क्योंकि हमारा प्रदेश टाइगर स्टेट कहलाता है. 'टाइगर स्टेट' होना केवल एक सरकारी उपलब्धि नहीं, बल्कि प्रदेश की सबसे बड़ी प्राकृतिक पहचान और वैश्विक पहचान भी है. वर्ष 2022 की बाघ गणना में 785 बाघों के साथ देश में पहला स्थान हासिल करने वाला मध्य प्रदेश अब एक रिपोर्ट के अनुसार 2026 की गणना में लगभग 1100 बाघों के आंकड़े तक पहुंच सकता है. यदि ऐसा होता है तो यह लगभग 40 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि होगी. यह सफलता बताती है कि पिछले वर्षों में संरक्षण, वैज्ञानिक प्रबंधन और वन विभाग के प्रयासों ने सकारात्मक परिणाम दिए हैं. लेकिन यह उपलब्धि अपने साथ नई और बड़ी जिम्मेदारियां भी लेकर आई है.

बाघों की बढ़ती संख्या इस बात का प्रमाण है कि प्रदेश के जंगलों में उनका प्रजनन बेहतर हुआ है. अब स्थिति यह है कि टाइगर रिजर्व की सीमाएं उनके लिए छोटी पड़ने लगी हैं. युवा बाघ नए इलाकों की तलाश में भोपाल, रायसेन, देवास जैसे वन मंडलों तक पहुंच रहे हैं, जहां कभी उनकी स्थायी मौजूदगी नहीं थी. यह प्रकृति का स्वाभाविक व्यवहार है, लेकिन इसके कारण मानव-वन्यजीव संघर्ष की आशंका भी बढ़ रही है. इसलिए अब केवल बाघों की संख्या बढ़ाना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि उनके लिए सुरक्षित और विस्तृत आवास उपलब्ध कराना सबसे बड़ी आवश्यकता है.

मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में वन्य पर्यटन का योगदान लगातार बढ़ रहा है. कान्हा, बांधवगढ़, पेंच, सतपुड़ा, पन्ना और संजय-डुबरी जैसे टाइगर रिजर्व देश-विदेश के लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं. इससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होते हैं, होटल, परिवहन, हस्तशिल्प और अन्य सेवाओं को भी गति मिलती है. पर्यटन की इस पूरी श्रृंखला का सबसे बड़ा आकर्षण बाघ ही हैं. इसलिए बाघों का संरक्षण केवल पर्यावरण का विषय नहीं, बल्कि आर्थिक विकास और ग्रामीण आजीविका से भी जुड़ा हुआ है.

सरकार को अब अपनी प्राथमिकताओं में बदलाव करना होगा. जंगलों के बीच प्राकृतिक कॉरिडोर सुरक्षित रखना, बफर क्षेत्रों को मजबूत बनाना, अतिक्रमण रोकना और विकास परियोजनाओं में वन्यजीवों की आवाजाही का विशेष ध्यान रखना समय की मांग है. यदि जंगल आपस में जुड़े रहेंगे तो बाघ सुरक्षित रूप से नए क्षेत्रों में पहुंच सकेंगे और मानव बस्तियों में उनके प्रवेश की घटनाएं भी कम होंगी. इसके साथ ही स्थानीय समुदायों की भागीदारी बढ़ाना और उन्हें संरक्षण का भागीदार बनाना भी उतना ही आवश्यक है.

मध्य प्रदेश ने टाइगर संरक्षण के क्षेत्र में देश के सामने एक सफल मॉडल प्रस्तुत किया है. अब अगला लक्ष्य केवल 'सबसे ज्यादा बाघ' होना नहीं, बल्कि 'सबसे सुरक्षित बाघ आवास' बनना होना चाहिए. टाइगर स्टेट की पहचान तभी सार्थक होगी, जब हर बाघ को सुरक्षित जंगल, पर्याप्त क्षेत्र और निर्बाध प्राकृतिक मार्ग मिल सके. यही प्रदेश की जैव विविधता की रक्षा करेगा, पर्यटन को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए मध्य प्रदेश की इस अनमोल धरोहर को सुरक्षित रखेगा. दरअसल, बाघ मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी यूएसपी हैं. इसलिए उनकी सुरक्षा और उनके प्राकृतिक आवास का संरक्षण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता होना ही चाहिए.

कम उम्र में जीवन बीमा खरीदना सबसे बेहतर

श्रीराम
(लाइफ इंश्योरेंस के एमडी और सीईओ)

> आज के अनिश्चित समय में चाहे हेल्थ जोखिम हों, आर्थिक मंदी, युद्ध की आशंका या नौकरी की अस्थिरता जीवन बीमा कोई विलासिता नहीं, बल्कि जरूरत है. चाहे उद्देश्य टैक्स बचाना हो, संपत्ति बनाना हो या परिवार का भविष्य सुरक्षित करना. जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, उतना ज्यादा फायदा मिलेगा. कैरियर की शुरुआत में जीवन बीमा लेना भले ही समय से पहले लिया गया फैसला लगे, लेकिन वास्तव में यह सबसे परिपक्व और रणनीतिक वित्तीय निर्णयों में से एक है.

जीवन बीमा वह विषय नहीं जिस पर लोग सुबह की चाय या कॉफी के साथ सोचते हो. आमतौर पर यह बात तब ध्यान में आती है जब जीवन में शांत या गंभीर पल सामने आते है. जैसे परिवार का कोई सदस्य अस्पताल में भर्ती हो जाए, किसी दोस्त के घर बच्चा हो जाए, या कोई वित्तीय फॉर्म भरते समय निवेश की जानकारी देनी हो. ऐसे समय आप ठहरकर सोच सकते हैं, क्या मैं जीवन बीमा लेने के लिए अभी बहुत छोटा हूं? लेकिन सच यह है कि जीवन बीमा लेने का सबसे अच्छा समय वही है जब यह आप जरूरत महसूस होने से पहले ही इसे ले ले. क्योंकि तब यह सबसे सस्ता होता है. प्रीमियम भी कम देना पड़ता है. हालांकि कम प्रीमियम के अलावा भी कम उम्र में बीमा लेने के कई फायदे है.

भारत की युवा पॉलिसी दस्तावेज के अनुसार, देश की 37.14प्रतिशत आबादी 15 से 29 वर्ष के आयु वर्ग की है. यह कुल आबादी का 27.3प्रतिशत है. यह आर्थिक रूप से सक्रिय लोगों का एक बड़ा हिस्सा है. इसके बावजूद भारत में जीवन बीमा की पहुंच अभी भी कम है. अलबत्ता यह कम हो रही है. यह वित्त वर्ष 2023 में 3त्न से घटकर वित्त वर्ष 2024 में 2.8 प्रतिशत रह गई. इसका मतलब है कि देश के युवाओं का बड़ा हिस्सा अब भी कम बीमित या बिना बीमा के है. इस अंतर की एक वजह यह है कि लोग जीवन बीमा को सुरक्षा के साधन के बजाय बचत के प्रॉडक्ट के रूप में देखते है. यह धारणा भी है कि जीवन बीमा सिर्फ बुजुर्गों के लिए होता है और इसे बाद में लिया जा सकता है. आम तौर पर लोग शादी, घर खरीदने या बच्चे होने जैसे अवसरों पर बीमा लेने का सोचते है. आज की युवा पीढ़ी इन फैसलों को भी देर से ले रही है. इसलिए उन्हें इसकी तुरंत जरूरत महसूस नहीं होती. लेकिन जीवन बीमा सिर्फ कम उम्र में एक समझदारी भरा फैसला ही नहीं है, बल्कि यह आपके लंबे समय के वित्तीय नियोजन में बड़ा बदलाव ला सकता है. कम प्रीमियम को लंबे समय के लिए लॉक करना-जीवन बीमा का प्रीमियम आपकी उम्र और स्वास्थ्य पर निर्भर करता है. कम उम्र में आप कम जोखिम वाले ग्राहक माने जाते हैं क्योंकि आप अपेक्षाकृत स्वस्थ होते है. इससे कम प्रीमियम पर ज्यादा लाभ मिलता है और पॉलिसी की मंजूरी भी आसान हो जाती है. कर्ज प्रबंधन में मदद- कम उम्र में ली गई जीवन बीमा पॉलिसी सिर्फ सुरक्षा ही नहीं देती, बल्कि भविष्य में कर्ज प्रबंधन का साधन भी बन सकती है. अनिवार्य लॉक-इन अवधि पूरी होने के बाद कुछ पॉलिसियों, जैसे एंडोमेंट प्लान और यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान (यूलिप) के खिलाफ सरेंडर वैल्यू पर लोन लिया जा सकता है. पॉलिसी के प्रकार और सरेंडर वैल्यू के अनुसार लोन आमतौर पर 50 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक मिल सकता है. इससे बिना निवेश तोड़े तुरंत धन की व्यवस्था हो जाती है. साथ ही इसमें तेज मंजूरी, कम ब्याज दर और लचीला भुगतान जैसे फायदे मिलते है. इस तरह यह आपात स्थितियों में एक अहम वित्तीय सहारा बनता है और परिवार की दीर्घकालिक सुरक्षा भी बनी रहती है.

कैश वैल्यू के जरिए लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण-कुछ जीवन बीमा योजनाएं, जैसे एंडोमेंट प्लान या यूलिप, बचत या निवेश का हिस्सा भी रखती है. इससे समय के साथ नकद मूल्य बनता है. कम उम्र में शुरुआत करने से इस लाभ को अधिकतम किया जा सकता है. इससे आगे चलकर उच्च शिक्षा, शादी, घर खरीदने या रिटायरमेंट जैसे बड़े लक्ष्यों के लिए फंड तैयार होता है. चक्रवृद्धि का पूरा लाभ-जल्दी निवेश शुरू करने से चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) का लाभ मिलता है. जीवन बीमा योजनाएं स्थिर और मजबूत रिटर्न दे सकती है. कम उम्र में छोटी राशि से शुरू किया गया निवेश समय के साथ बड़ी रकम में बदल सकता है. यह मानसिक शांति और आर्थिक मजबूती दोनों देता है. आसान मंजूरी और कम मेडिकल जांच- कम उम्र और अच्छे स्वास्थ्य में जीवन बीमा लेना आसान होता है. अक्सर कम या बहुत सीमित मेडिकल जांच की जरूरत पड़ती है और मंजूरी जल्दी मिल जाती है. उम्र बढ़ने के साथ स्वास्थ्य समस्याएं आवेदन को जटिल बना सकती हैं, प्रीमियम बढ़ सकता है या पॉलिसी अस्वीकृत भी हो सकती है. जल्दी बीमा लेने वाले इन समस्याओं से बच जाते है.

लंबे समय तक टैक्स लाभ-आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत जीवन बीमा प्रीमियम पर सालाना 1.5 लाख रुपए तक की कर छूट मिलती है. वहीं परिपक्वता (मैच्योरिटी) की राशि धारा 10(10डी) के तहत कर मुक्त होती है. कम उम्र में बीमा लेने से आप अपने कैरियर की शुरुआत से ही इन टैक्स लाभों का फायदा उठा सकते है. बचत को बेहतर बना सकते है.

ग्वालियर चंबल डायरी

दतिया : दोनों दलों को सबोटेज का खतरा, जुटे डैमेज कंट्रोल में

हरीश दुबे

यह कम ही लोगों को पता होगा कि देश की आजादी के बाद दतिया को मध्यभारत राज्य के बजाए विंध्य प्रदेश का हिस्सा बनाया गया था. जब 56 में राज्यों के पुनर्गठन में कई छोटे राज्यों का विलय कर मध्यप्रदेश बनाया गया तो दतिया क्षेत्रफल के लिहाज से उस समय के सबसे छोटे जिले के रूप में मप्र में शामिल किया गया. बहरहाल, आजादी के बाद 52 से लेकर अब तक दतिया विधानसभा क्षेत्र में 16 चुनाव हुए हैं, जिनमें सर्वाधिक बार (नौ दफा) कांग्रेस ही जीती है. जनसंघ दो बार, भाजपा चार बार और सपा एक मर्तबा जीती. बहरहाल, इस बार जैसा दिलचस्प, रोमांचक और कांटे का चुनाव पहले कभी नहीं हुआ. राजनीति के धुरंधर पंडित भी भरोसे के साथ आंकलन नहीं लगा पा रहे हैं कि 26 के इस उपचुनाव में जीत का सेहरा किसके सिर बंधेगा और किसे हार का सितम झेलना होगा. हाल के वर्षों में यह पहला उपचुनाव है जिसमें पूरी सरकार डटी रही.

सीएम तीन बार आए, पूरे चुनाव अभियान की कमान भाजपा और कांग्रेस के सूबा सदरों ने संभाली. ऐसा लगा जैसे अब बुंदेलखंड का यह जिला ही मप्र की राजनीति का भाग्यविधाता बनने जा रहा है. प्रत्याशी के नाम का ऐलान होने वाले दिन शाम तक खुद को सुनिश्चित उम्मीदवार मानकर जनसंपर्क और सभाओं में जुटे डॉ. नरोत्तम मिश्रा का टिकट कटने के बाद भाजपा को कांग्रेस से भिड़ने के पहले अपनी ही पार्टी में डैमेज कंट्रोल पर ज्यादा मेहनत करनी पड़ी. डॉ. मिश्रा को उम्मीद थी कि इस बार विधायक बनकर वे इसी सीट पर चार बार विधायक रहे कांग्रेस के स्व. श्यामसुन्दर श्याम के रिकॉर्ड की बराबरी कर लेंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ. हां, वे स्व. श्यामसुंदर के पुत्र राजेन्द्र भारती की तरह तीन बार विधायक जरुर रहे. डॉ मिश्रा के साथ यह प्लस प्वाइंट जरूर है कि श्यामसुंदर श्याम और राजेंद्र भारती लगातार तीन बार विधायक कभी नहीं रहे, लगातार इतनी बार जीतने का रिकॉर्ड नरोत्तम ने ही रचा है. नरोत्तम के डबरा छोड़कर दतिया आने के बाद कांग्रेस के कुंवर घनश्याम सिंह दतिया छोड़कर पड़ोसी सीट सेबढ़ा चले गए थे लेकिन नरोत्तम का टिकट कटा तो कुंवर कांग्रेस से प्रत्याशी बनने के लिए तैयार हो गये. भाजपा की ही तरह कांग्रेस को भी भितरघात रोकने के लिए डैमेज कंट्रोल के लिए खासा वर्कआउट करना पड़ा. भाजपा द्वारा ब्राह्मण प्रत्याशी मैदान में उतारने के बाद कांग्रेस में अवधेश नायक एकदम से महत्त्वपूर्ण हो गए और उन्हें मनाने के लिए जीतू पटवारी को कई बार उनके घर जाना पड़ा तो दिग्विजय ने पिछली बार उनका टिकट कटने के लिए खुद को जिम्मेदार मानते हुए भरी सभा में उनसे माफी मांगी. निवर्तमान विधायक राजेंद्र भारती भी कांग्रेस के पूरे प्रचार अभियान में रूठे रूठे से रहे.

चेंबर : पदाधिकारी बना रहे स्वतंत्र पहचान

तो क्या ग्वालियर चंबल अंचल के व्यापारियों की सबसे बड़ी संस्था मप्र चेंबर ऑफ कॉमर्स से हाउसों का वजूद पूरी तरह खत्म हो गया है या होने जा रहा है, व्यापारी हलकों में यही चर्चा है. चेंबर चुनाव में इस बार कोई भी हाउस दमदारी नहीं दिखा सका. अध्यक्ष पद पर जहां व्हाइट हाउस के प्रत्याशी को करारी शिकस्त मिली वहीं क्रिएटिव ने इस शीर्ष पद के लिए प्रत्याशी ही मैदान में नहीं उतारा था.

सावन मेला बना घाटे का सौदा

जंगल में मोर नाचा किसने देखा, यह कहावत इन दिनों ग्वालियर व्यापार मेला परिसर में लगे सावन मेला पर खूब लागू हो रही है. अधिकांश शहरवासियों को पता ही नहीं है कि उनके शहर में सावन मेला लगने जा रहा है, वजह यह कि मेला प्राधिकरण ने सावन मेला का नामचारे तक के लिए प्रचार प्रसार नहीं किया. सैलानियों के बेहद कम संख्या में आने की आशंका के चलते यहां महंगे किराए पर दुकानें लेने वाले व्यापारियों के लिए सावन मेला घाटे का सौदा बन गया है. व्यापारी असमंजस में हैं, सावन मेला शिड्यूल के हिसाब से 20 जुलाई को शुरू हो जाना था लेकिन अब तक हीलहवाला नहीं है.

बीजेपी नेताओं की बेटियां भी उद्विग्न

जरूरी नहीं है कि नेताओं की बेटियां अपने पिता के समान सोच रखें और किसी मुद्दे पर खुलकर न बोलें. जेन जी या युवा पीढ़ी की अपनी स्वतंत्र सोच है. लोकतंत्र में उसे मुखर रहने और अपने विचार व्यक्त करने का पूरा हक है. कोई भी नेता अपनी पार्टी के अनुशासन से बंधा रहता है लेकिन उसकी संतानों पर ऐसी बंदिश का सवाल ही नहीं उठता. असम की हिमंत बिस्वा सरमा के नेतृत्व वाली बीजेपी सरकार के मंत्री केशब महंता, उत्तर प्रदेश के बीजेपी विधायक विक्रम सिंह तथा बीजेपी सांसद अपराजिता सारंगी जैसे नेताओं की बेटियों ने सोशल मीडिया पोस्ट पर छात्र आंदोलन के प्रति सहानुभूति दर्शाई तथा इस मुद्दे से निपटने के तौर तरीके को लेकर सरकार की आलोचना की. इन बेटियों के अभिभावकों ने स्वयं को उनके बयानों से दूर कर लिया. बात भी सही है. आज के बच्चे अपनी खुली सोच रखते हैं और अपनी समझ से काम लेते हैं. वह मां-बाप की उंगली पकड़कर चलने की उम्र के नहीं हैं. उन्हें असहमत होने का अधिकार है. छात्र आंदोलन के दौरान लाठीचार्ज व फायरिंग की घटना ने सभी को विचलित कर दिया. युवा मन का इससे उद्विग्न होना स्वाभाविक था. जो बात अनुचित व गलत लगे, उस पर प्रतिक्रिया देना स्वाभाविक है. असम के सीएम हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा कि केशब महंता की बेटी की पोस्ट पसोपेश में डालने वाली है. वह उससे खुद बात करेंगे. यह कहना सही नहीं है कि सिर्फ सोशल मीडिया पोस्ट की वजह से धर्मेंद्र प्रधान को शिक्षा मंत्री पद से इस्तीफा देने के लिए बाध्य करना पड़ा. छात्र आंदोलन, विपक्ष द्वारा संसद को ठप करना तथा महत्वपूर्ण विधेयक पारित करने के लिए सदन में उपयुक्त माहौल बनाने की सरकार की इच्छा भी इसके पीछे रही होगी. जहां तक नेताओं की बेटियों की बात है, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की बेटी दिविजा का बयान बहुत ही संतुलित व नपेतुले शब्दों में था. दिविजा ने कहा कि शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन लोकतांत्रिक अधिकार है परंतु हिंसा चाहे वह प्रदर्शनकारियों की हो या पुलिस की, अस्वीकार्य है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

क्यों याद आने लगा पुराना गाना बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने ठाकरे बंधुओं उद्धव और राज पर हमला बोलते हुए कहा कि छात्रों ने अपना आंदोलन वापस ले लिया है लेकिन कुछ लोग इस बहाने अपनी राजनीति चमकाने में लगे हैं. उनकी स्थिति बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना जैसी हो गई है. निशानेबाज, बताइए कि यह अब्दुल्ला कौन है?

हमने शेख मोहम्मद अब्दुल्ला, फारूक अब्दुल्ला और उमर अब्दुल्ला के नाम सुने थे लेकिन यह कौन सा अब्दुल्ला है जो बिना निमंत्रण मिले, अनजाने लोगों के यहां शादी में जा धमकता है? क्या उसे वहां से खदेड़ दिया जाता है?'

हमने कहा, 'दरअसल यह गीत राजकपूर की फिल्म 'जिस देश में गंगा बहती है' का है. इस फिल्म में राजू (राजकपूर) डाकुओं की बस्ती में पहुंच जाता है जो उसे पुलिस का भेदिया या मुखबिर समझते हैं फिर वह वहीं ठहर जाता है और क्रूर डाकुओं को शांति और अहिंसा की सीख देने लगता है. डाकू सरदार की बेटी (पद्मिनी) उससे प्रेम करने लग जाती है और गाने लगती है बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना, ऐसे मनमौजी को मुश्किल है समझाना!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, शादी के शानदार रिसेप्शन में भी कुछ अनजान लोग ग्रुप बनाकर दावत का मजा लेने घुस जाते हैं और डटकर पेटपूजा करते हैं. लड़की वाले समझते हैं कि यह लोग लड़के वालों की तरफ से आए हैं और लड़के वाले सोचते हैं कि यह लोग लड़की वाले या कन्यापक्ष के होंगे. ऐसे मुफ्तखोरों को पकड़ना मुश्किल है. क्योंकि यह 100 रुपये का लिफाफा टिकाकर हजार रुपये का माल खा जाते हैं. आपने फिल्म थ्री इडियट्स में देखा होगा कि आमिरखान और उसके दोनों दोस्त कैसे शादी में घुसकर खाना खाते पकड़े जाते हैं और उन्हें वहां से भागने की नौबत आ जाती है.'

हमने कहा, 'चालाक लोग मौका पाकर कहीं भी घुसपैठ करते हैं. वह हमेशा अवसर की ताक में रहते हैं. आज की राजनीति में गद्दार, खुद्दार और ईमानदार को पहचान पाना कठिन हो गया है क्योंकि लोग गिरगिट के समान रंग बदलते हैं. आपने गीत सुना होगा इस रंग बदलती दुनिया में इंसान की नीयत ठीक नहीं, निकला ना करो तुम सज-धज के, ईमान की नीयत ठीक नहीं!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12334 - डॉ. सागर खादीवाला

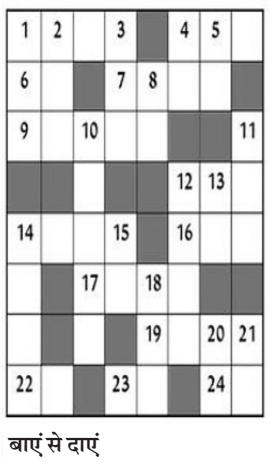

ऊपर से नीचे

1. गंधक शोरे और पिसे हुए कोयले का विस्फोटक चूर्ण 2. आग लगाना, दाह 3. सुंदरी, खूबसूरत स्त्री 4. शीघ्र, तुरंत (सं) 5. देश (उर्दू) 8. समाना, आना 10. मध्य में, बीच में 11. दर्पण 12. सितार की तरह का एक बाजा जिसमें केवल एक तार होता है 13. एक घास, खांसी 14. किसी को मरने से बचाना 15. कुचले जाने का शब्द 18. सौगंध, शपथ 20. पत्र आदि पर लिखा किसी का नाम और रहने की जगह, खोज 21. नौका, किश्ती, पोत

बाएं से दाएं

1. बड़ा राजा, ताश का एक पत्ता, शतरंज का एक मोहरा 4. प्रस्तावना 6. आत्मा, जीव, सत्त, सार 7. वह शुल्क जो देश के बाहर से आयात होने वाले या बाहर जाने वाले पदार्थों पर लगता है, कस्टम ड्यूटी 9. दन-दन शब्द सहित 12. एकांक, एक का मान 14. आरंभ का, पहले का 16. बंधन या तनाव का कड़ा करना, दूध को गाढा करके खोया बनाना 17. भीख मांगने का कार्य या भाव 19. शाप देना, कोसना 22. नट की स्त्री नट जाति की स्त्री 23. कृपण, कंजूस 24. तपाने या पकाने के लिए पहुंचाई जाने वाली गर्मी, कागज का तख्ता (शीट)

Solution 12333

ख्या	त	■	फि	र	■	भ	य
ल	■	अ	दा	■	ता	ली	■
■	ते	ब	■	दू	ब	■	म
पे	ठा	■	बा	र	■	मा	न
ड़	■	गा	जी	■	पि	तृ	■
■	शी	ल	■	पा	या	■	सा
रे	शा	■	अ	र्थ	■	आ	ग
त	■	वि	श्व	■	फ	रा	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी. उत्साह बना रहेगा. मित्र के सहयोग से व्यापार में लाभ प्राप्त होगा. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. वर्ष के मध्य में दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा. धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. राजनैतिक विवाद की स्थिति आ सकती है. व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा. वर्ष के अन्त में दौड़धूप करना होगी, मित्र से वाद विवाद हो सकता है, अचानक धन लाभ मिलेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन में वाद विवाद होगा. धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियोंको व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा. शिक्षामें व्यवधान आयेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियोंको खानपान पर संयम रखना होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को निजी दायित्वों की पूर्ति होगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों कोजमीन जायजाद के कार्यों में परिश्रम अधिक करना होगा, साहसिक कार्यों में सफलता मिलेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मांगलिक कार्यों के संपनन होने में सहायता प्राप्त होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, हंसमुख, मिलनसार होगा. शिक्षा में अग्रणी होगा. नौकरी या पैतृक कार्यों में संलग्नता रहेगी. मेहनत अधिक करेगा. माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

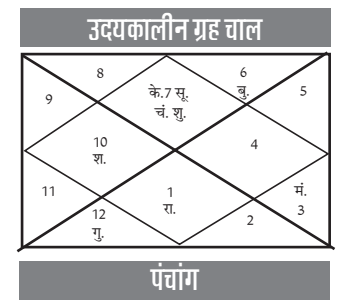

पंचांग

रा.मि. 08 संवत् 2083 श्रावण कृष्ण प्रतिपदा गुरूवासरे रात 8/34, श्रवण नक्षत्रे शाम 6/1, आयुष्मान योगे रात 1/11, बालव करणे सू.उ. 5/23, सू.अ. 6/37, चन्द्रचार मकर, शु.रा. 10, 12, 1, 4, 5, 8 अ.रा. 11, 2, 3, 6, 7, 9 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से लाल रंग की वस्तुओं में तेजी होगी, किन्तु आज मंदी पर गेंहूँ, चना में तेजी का रूख रहेगा. तिलहन में तेजी का योग है. सफेद रंग की वस्तुओं में अचानक तेजी होगी. भाग्यांक 5719 है.

मेष- अपनी मेहनत को बेकार होते देखना खिन्नता पैदा करेगा, प्रियजनों सेमनमुटाव संभव है. किसी व्यक्ति की सलाह आपके कार्यों को गति देगा. लाभप्रद सूचना मिलेगी.

वृषभ- भावनाओं में बहकर आप परिवार को विरोधी बना लेंगे, जोखिम के कार्यों में रूचि बढेगी. किसी व्यक्ति के द्वारा अपमान का शिकार होना पड़ेगा.

मिथुन- अपनी बात समझाने में नाकाम रहेंगे, और संबंधों में दूरियां बढ़ सकती हैं. अनावश्यक कार्यों में समय एवं धन खर्च होगा. श्रम की अधिकता रहेगी.

कर्क- शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी दूर होगी. आर्थिक लाभ का योग है. कामकाजी महिलाओं को कार्य अधिक करना होगा.

सिंह- कार्य का चिन्तन तनाव का कारण बन सकता है. व्यापारिक सौदेबाजी में सावधानी रखें. कुटुम्बियों के कार्यों को पूरा करने में व्यस्तता रहेगी.

कन्या- योजनाओं में बदलाव करके अच्छा लाभ कमा सकते हैं .दुविधा से हटकर कार्य करें. पूँजी लगाने में सावधानी रखें. मांगलिक कार्य बनेंगा. संयम रखें.

तुला- अपूर्ण समाचारों पर लिये गये फैसले से नुकसान होगा. स्वयं से कोई भूल होगी. वैभव विलासिता की वस्तुओं का संचय होगा.

वृश्चिक- सुख सुविधा के सामानों पर बड़े खर्च की संभावना है. दौड़धूप में सफ्लता मिलेगी. सुख सुविधा एवं आनन्द की अनुभूति होगी. कुछ कार्यों में परेशानी आ सकती है.

धनु- प्रापर्टी संबंधी विवादों के समाधान से राहत मिलेगी. कोर्ट कचहरी के कार्यों में विलंब होगा. सुख शांति में कमी होगी. कम लाभ में भी संतोष बना रहेगा.

मकर- आपका झुकाव परिवार की ओर कुछ ज्यादा ही रहेगा, जिससे कार्य स्थल की व्यवस्था बिगड़ सकती है. कार्य कुशलता से बड़े बड़े काम बनेंगे.

कुम्भ- मांगलिक कार्यों में खर्च की संभावना बन सकती है. व्यापार व्यवसाय में सावधानी रखें. सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. जीवनसाथी के सहयोग से लाभ होगा.

मीन- तनाव के चलते सेहत बिगड सकती है. शुभ समाचारों के मिलने का योग है. परिश्रम सार्थक होगा. नौकरी में अधिकारियों के कोप का सामना करना पड़ेगा.

SUDOKU 7466

4					1	9		
						8	5	
			7	3				
			3				4	7
9								2
8	5				6			
				5	8			
	7	4						
		6	2					5

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7465

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1